नफ़रत के सौदागर

अनुवादक
डॉ रेश्मा एम एल

टीडी रामकृष्णन

आधी रात लगातार दरवाजे की घंटी बजने से जब मेरी नींद खुली, तब मुझे इसका कोई अंदाज़ा नहीं था कि कौन सी आफ़त आने वाली है। मुझे लगा कि शायद कोई शराबी पड़ोसी अपना घर भूल गया है या हो सकता है कि कोई मुझे मुहल्ले के किसी मरीज़ को अस्पताल ले जाने के लिए बुला रहा हो। लेकिन जब मैंने दरवाज़ा खोला तो हैरान रह गया। मेरे सामने तीन- चार अजनबी थे। सभी ने भगवा लुंगी और काली कमीज़ पहन रखी थी। माथे पर केसर, चंदन और काली प्रसाद से यह साफ़ था कि वे लोग कौन हैं। कल शाम शहर में के. एस. भगवान के साथ एक कार्यक्रम में हिस्सा लेने की वजह से, मुझे इतनी त्वरित प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी। एक थोड़ा मोटा और गंजा आदमी, जो उनका नेता लग रहा था, सूखी मुस्कान के साथ आगे बढ़कर बरामदे में आ गया।

“उपन्यासकार रामचन्द्रन? हमारे साथ ऑफ़िस चलना पड़ेगा।“ “हम कार से आए हैं।”

"कौन सा ऑफिस?"

"सर, जब मैं ऑफ़िस कहता हूं तो आपको समझ नहीं आता है क्या?" हमको सुंदरजी ने भेजा है।
सुंदरजी नाम सुना तो बातें थोड़ी स्पष्ट हो गईं। सुंदररामन और मैंने एक साथ स्नातक की पढ़ाई की थी। तब वे उग्र हिंदू विचारधारा के समर्थक थे। फिर पढ़ाई और बाक़ी सब कुछ छोड़-छाड़कर पार्टी के एक बड़े कार्यकर्ता बन गए। अब पार्टी में बहुत उन्नत पद पर हैं। सब लोग उन्हें सुंदरजी कहकर पुकारते हैं। सौम्य और विनम्र होने के कारण वह सार्वजनिक रूप से स्वीकार्य भी हैं। लेकिन उन्होंने मुझे आधी रात को क्यों बुलाया?”

“क्या इतना ज़रूरी काम है। अगर सुंदरजी मुझसे कल बात करें, तो ठीक नहीं रहेगा?"

“अरे नहीं, अगर वह कुछ करने का फैसला करते हैं, तो वह उसे तुरंत करते हैं। तुम्हें मारा नहीं जा रहा है, बल्कि साथ लेकर जा रहे हैं। कुछ मुद्दों पर चर्चा करने के लिए। उसके बाद, वापस यहीं छोड़ जाएंगे।”

उनसे बहस करना व्यर्थ था, इसलिए जल्दी से अंदर गया और अपनी बुशर्ट ले आया... "मारने के लिए नहीं ले जा रहा हूं" शब्दों ने उसकी पत्नी को कुछ सांत्वना दी होगी, जो तब तक वहां □री हुई खड़ी थी।
"सुन्दर मुझसे मिलना चाहता है, तुम लेट जाओ, वापस आने में देरी होगी।"
मुझे आश्चर्य है कि जब मैंने उसे बताया तो क्या मेरी आवाज़ में कंपन था। कई साल हो गए मुझे सुंदरन को देखे या उससे बात किए। केवल टीवी चैनल की चर्चाओं में देखा है। लेकिन एक नेता के रूप में मुझे उसकी प्रगति के बारे में जानकारी थी और एक लेखक के रूप में उसे भी मेरी प्रगति के बारे में पता था।

कार में उन लोगों ने मुझसे ज़्यादा बात नहीं की। म्यूज़िक प्लेयर से निकलते देशभक्ति गीतों की पृष्ठभूमि में सुंदरजी के नेतृत्व कौशल और समर्पण के बारे में काफी कुछ बताया गया। उन्होंने कहा कि मैं भाग्यशाली हूं कि मैं उनका सहपाठी रहा हूं और वह भविष्य में इस प्रदेश के मुख्यमंत्री बनेंगे। ब-मुश्किल आधे घंटे में हम ऑफ़िस पहुंच गए। यह अग्रहारम् तक फैला हुआ एक पुराना घर था, जिसमें केवल ब्राह्मण लोग रहते थे। दो-तीन कमरे पार करके जब मैं मुख्य कमरे में पहुंचा तो वहां सुंदरजी और उनके साथी मेरा इंतज़ार कर रहे थे।

सुंदरजी सफेद वस्त्र पहने हुए थे। उचित कसरत और नियमित जीवन-शैली से सुड़ौल शरीर। पूरी तरह से सफ़ेद दाढ़ी सुव्यावस्थित □ंग से काटी गई है। गले में सोने से जड़ा हुआ पंचमुखी रुद्राक्ष और आंखों में एक भयानक ख़तरनाक चमक है।

"यह सत्ता की चमक है।" मैंने मन ही मन कहा।
माथे पर केसर, चंदन और काले प्रसाद। उसने एक चमचमाती बनावटी मुस्कान के साथ हाथ जोड़कर मेरा स्वागत किया।

" नमस्ते रामचंद्र जी, जय जय श्रीराम।"

अब तक मैं अभिवादन में हाथ उठाकर उनकी बताई गई कुर्सी पर बैठ गया था। तब उनके एक साथी ने मुझे केले के एक छोटे से पत्ते में एक फूल, प्रसाद, एक वड़ा और कुछ अवल दिए।
"किले के अंदर हनुमान मंदिर के वड़माला है खाओ।"

"मुझे इतनी रात यहां क्यों बुलाया गया है?"

"जल्दबाज़ी की कोई ज़रुरत नहीं। रामचन्द्र जी... मैं विस्तार से आपको सब कुछ बताऊंगा। पहले प्रसाद खाएं..।"

मैंने पत्ते से चंदन निकाला, माथे से लगाया और वड़ा का एक टुकड़ा तोड़कर खा लिया। सुन्दरजी ने अपने साथियों की ओर ऐसे देखा जैसे कोई चमत्कार हो गया हो और हँस पड़े।

“रामचंद्रजी, वे मुझसे कह रहे थे कि आप एक महान तर्कवादी हैं। आप चंदन को नहीं छुएंगे, प्रसाद न खाएंगे। क्या कोई ऐसे ही अपना जन्मजात धर्म या माँ बदल सकता है, नहीं ना? क्या मैं तुम्हें पचास साल से नहीं जानता? आपने कल के. एस. भगवान के साथ एक समारोह में भाग लिया था ना? आप सभी ने उस मंच पर हम लोगों का भरपूर अपमान किया। पूरा कार्यक्रम हमारे एक कर्मचारी ने शूट किया और मुझे दिखाया। यही कारण है कि तुम्हें तुरंत यहाँ बुलाना पड़ा है।“

“तब तो आप मेरी दृष्टि स्पष्ट रूप से समझ गए होंगे और ऐसी बैठक का क्या मतलब है?”

“मतलब है। एक सहपाठी के रूप में मेरी जिम्मेदारी है कि मैं तुम्हें बुराई से अच्छाई की ओर ले जाऊं। जिनके नाम में भगवान और रामचन्द्र है, वे भगवान को नकारने वाले बन जाएं और इस देश के लिए ख़तरा पैदा करें।”

“मेरा नाम मैंने नहीं चुना है। भगवान के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा। हमारा मानना है कि हमारे शब्द या कर्म से इस देश को कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए।

"ठीक है, अगर ऐसा है, तो मैं खुश हूं रामचन्द्रजी।" आप आज एक मशहूर लेखक हैं। हमें इस पर बहुत गर्व है। हमारा संगठन चाहता है कि आप जैसे लोग हमारे साथ खड़े हों और इस देश की प्रगति और विकास में भाग लें। हम चाहते हैं कि आपको लेखक के रूप में अच्छी पहचान मिले। इसके लिए कुछ ज़रूरी काम करने का प्रस्ताव है। लेकिन यह एक समस्या हो सकती है कि आप सामाजिक और राजनीतिक तौर पर क्या रवैया अपनाते हैं। क्या हमारे बीच के इस तरह के मतभेदों को कम नहीं किया जा सकता?"

“यह इतना आसान नहीं लगता। मैं ऐसा व्यक्ति हूं जो ज्ञान और अनुभव के आधार पर चीजों को समझने की कोशिश करता हूं। आप और आपका संगठन मुद्दों पर विश्वास और प्रथाओं के आधार पर विचार करते हैं। ये दो बहुत अलग दृष्टिकोण हैं। हमारे मतभेद रातों-रात हल नहीं हो सकते, और मैं किसी मान्यता या रुतबे के लिए अपने विचार नहीं बदलना चाहता।"

“यह सच है कि हमारे दृष्टिकोण काफी भिन्न हैं। ब्रह्मां□ की अनंतता और विशालता की तुलना में मानव जाति का ज्ञान और अनुभव कितना महत्वहीन है। सूक्ष्म और स्थूल स्तर पर भी। क्या यह सही नहीं है कि हम उस तुच्छ ज्ञान पर गर्व करते हैं?”

“हमें इसको लेकर कोई घमं□ नहीं है... हम ब्रह्मां□ को बड़ी विनम्रता के साथ देखते हैं। लेकिन ऐसा नहीं माना जाता कि यह किसी अदृश्य शक्ति के नियंत्रण में है। आपके दृष्टिकोण की मूलभूत त्रुटि पौराणिक कथाओं को वैज्ञानिक मानने में है।''

"ठीक है, हम इस मामले में हम अपने बीच कोई विवाद नहीं करना चाहते हैं। आचार्यों ने कहा कि तर्कवादियों और साम्यवादियों से ब्रह्मां□ और ज्ञान के बारे में बहस न करें। लेकिन एक बात बिना पूछे नहीं रह सकता। आप जनतंत्र के महान समर्थक हैं, फिर भी आप जैसे लेखक और बुद्धिजीवी लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार के प्रति इतने असहिष्णु क्यों हैं? क्या हमें शांतिपूर्वक शासन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी?”

“तो यह बात है। सत्ता। इससे कोई नहीं बच सकता है ना?

हमारी ओर से कोई असहिष्णुता नहीं है। यह आप ही हैं जो इस बात को लेकर असहिष्णु हैं कि क्या खाना चाहिए, कौन से कपड़े पहनने चाहिए और कौन सा गाना, गाना चाहिए।”

“रामचंद्रजी प्रत्येक भूमि का अपना इतिहास और परंपरा है। भोजन, वस्त्र और संगीत इससे संबंधित है। हम उन चीजों के ख़िलाफ़ हैं जो हमारी भूमि के इतिहास और परंपरा को नकारती हैं।"

"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि गोमांस खाना हमारी परंपरा के ख़िलाफ़ है?"

“ज़रूर, हम गाय को भगवान मानते हैं। उन्हें गाय मां कहकर आदरपूर्वक पूजा जाता है।”

“लेकिन वेद-पुराणों में इसके विरुद्ध बहुत सी बातें हैं?

“शायद...हो सकता है। अब हमने ऐसी ग़लतियों को सुधारा है और गाय को गौ-माता के रूप में पूजा है। अब हमें उस पवित्र आस्था की रक्षा करने की ज़रूरत है। इसी बीच आप जैसे लोग उत्तर में कहीं किसी चरवाहे की हत्या को बड़ा मुद्दा बना देते हैं और दुनिया के सामने हमारे देश को बदनाम करते हैं।“

“आप जो कहते हैं वह सच नहीं है। वे ग़ैर-मौजूद गाय चोरी की कहानी बताकर नृशंस हत्या को महत्वहीन बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

“नहीं, रामचन्द्रजी, क्या आप गोमांस खाए बिना नहीं रह सकते? क्या किसी की ऐसी हालत हो गई है? और कौन सी चीजें खा सकते हैं? यदि आप मांस चाहते हैं तो क्या कोई अन्य जानवर नहीं मिलता है आपको? आप मछली खाते हैं? मैं समझता हूं कि आप भी शाकाहारी हैं। जैसा कि आप कहते हैं कि सभी प्रकार की हिंसा का विरोध किया जाना चाहिए, क्या आप भोजन के लिए किसी जानवर की हत्या को उचित ठहरा सकते हैं?''

“सुंदरजी आप एक चतुर राजनीतिज्ञ हैं। आपने मेरी निजी ज़िंदगी को बहुत बारीकी और गहराई से समझा है, लेकिन शाकाहारी होने के नाते, मैं अपने भाई के मांस खाने के अधिकार का समर्थन किए बिना नहीं रह सकता। वह तय करता है कि क्या खाना, खाना चाहता है
मुझे या सरकार को इससे कोई लेना-देना नहीं है।

“तब आपको अराजकता करने वालों की शराबखोरी और अय्याशी करने के अधिकार का भी समर्थन करना चाहिए।

बहस करने में क्षमता है इसलिए आप इस विषय को तुच्छ मत समझिए " भारत के बहुसंख्यक अवर्ण , मुसलमानों और आदिवासियों का मुख्य पौष्टिक भोजन बीफ़ है। यही कारण है कि हम जैसे लोगों को बीफ़ प्रतिबंध और दादरी[१] जैसी हत्याओं के ख़िलाफ़ लिखना और प्रचार करना पड़ता है।"

"लेकिन क्या आपको पता है कि ऐसी गतिविधियां देश की वैश्विक छवि पर कितना बुरा असर □ालती हैं?"

“सत्ता की छवि, देश की छवि नहीं है। आपने सूचना-प्रौद्योगिकी की तमाम संभावनाओं के दम पर सरकार की जो झूठी छवि बनाई है, वह □ह जाएगी। मेरा मानना है कि हमारी ओर से इस तरह के हस्तक्षेप की आवश्यकता है।"

सुंदरजी का चेहरा तुरंत गुस्से से लाल हो गया, लेकिन वह इसे अपनी नकली मुस्कान में बनाए रखने में कुछ हद तक सफल रहे, जैसा कि अपेक्षित था। परिचारकों में से एक ने हम दोनों के लिए गर्म ब्लैक-कॉफ़ी □ाली। मैंने सुंदरजी की ओर देखा कि क्या मुझसे कुछ और पूछना है।

“रामचंद्रजी आपने हमें बहुत ग़लत समझा है। हमारा एकमात्र उद्देश्य इस देश का विकास और प्रगति है।“अपने देश को विश्व में शीर्ष पर लाना ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है। हमारी सभी गतिविधियां देशभक्ति पर आधारित हैं। हम उन लोगों का विरोध करते हैं जो इस देश में पैदा हुए और पले-बढ़े हैं और दूसरे देशों के प्रति निष्ठा रखते हैं।”

“क्या आप इसीलिए कहते हैं, यदि तुम्हें गोमांस खाना है, तो पाकिस्तान चले जाओ। सुंदरजी, हमें भी इस देश से प्यार है। लेकिन लोगों के एक वर्ग को अलग-थलग करके देशभक्ति व्यक्त नहीं की जानी चाहिए। पिछले कुछ समय से मुसलमानों के प्रति आपके संगठन का रवैया ठीक नहीं है।

“भाई लगता है आप भूल गये हैं कि आप कहां बैठकर बात कर रहे हैं। यह तर्कवादियों या कम्युनिस्टों के सम्मेलन का मंच नहीं है। हमारा कार्यालय है।"

"याद दिलाने के लिए शुक्रिया।"

"अब तुम हमारे क़ैदी हो।"

" क़ैदी?"

"हां। तुम हमारे क़ैदी हो। इस देश का हर नागरिक हमारा क़ैदी है। यह पूरी तरह से एक वैचारिक जेल है। इस देश की महान विरासत का एक क़ैद। आप इससे आसानी से बच नहीं सकते।"

"मेरा ऐसा कोई विचार नहीं है।"

“आप जैसे लोगों को मौजूदा कानूनी प्रणाली द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए इसी तरह की व्यवस्था की ज़रूरत है। हमने भगवान को इसलिए बख़्श दिया कि आप चौथे लेखक की मृत्यु का जश्न न मनाएं और उन कुछ लेखकों या मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के □र से नहीं, जो उनका समर्थन करते हैं। हम तुम्हें एक ओर मौक़ा देंगे। खुद को सुधारने का मौक़ा। यदि आप ऐसा करने के इच्छुक हैं, तो एक व्यक्ति और एक लेखक के रूप में महान संभावनाएं आपका इंतजार कर रही हैं।"

"यह इसके लिए नहीं है कि इस देश में इतने सारे प्रमुख लेखकों ने पुरस्कार ठुकरा दिए हैं और इस्तीफा दे दिया है।"

"यह तुम्हारा फैसला हैं। कौन नहीं जानता कि सस्ते प्रचार के लिए कई लेखकों ने पुरस्कार लौटाए हैं और पदों से इस्तीफा दिया है। आमतौर पर लेखक प्रसिद्धि के लिए कुछ भी करते हैं। अब जब आपने पुरस्कार प्राप्त करने की सारी महिमा का जश्न मना लिया है तो अब पुरस्कार वापस देकर, उसका गौरव पाना भी एक हथकं□ा है। मैंने तुम्हें इस रूप में कभी नहीं देखा।"

"ये सब आपकी ग़लतफ़हमियां हैं। किसी साथी सहकर्मी के मारे जाने पर प्रतिक्रिया प्रकट करना स्वाभाविक है ना ? इस को इसी तरह देखना उचित हैं ?"

"उस सहकर्मी को क्यों मारा गया? क्या आपने पता किया? और इस देश की महान परंपरागत मान्यताओं को बदनाम करने के लिए। ऐसी गतिविधियों के पीछे कुछ गुप्त उद्देश्य होते हैं। मक़सद इस देश को धर्म और जाति के आधार पर बांटना है। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इसका हिस्सा न बनें।"

"यह एक बड़ा मज़ाक़ है। आप ही हैं जो धर्म और जाति के नाम पर ध्रुवीकरण करने की कोशिश कर रहे हैं और हम इसका बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं। ...और फिर आप हम पर भी तो यही आरोप लगाते हैं।''

"क्या आप वही नहीं हैं जो ग़ुलाम अली को यहां लाकर उनके गाने का कार्यक्रम करवाया था? एक पाकिस्तानी को आमंत्रित किया गया। क्या भारत में कोई दूसरे ग़ज़ल गायक नहीं थे? अब, यदि आप एक मुस्लिम चाहते हैं, तो उम्बाई या शाहबाज़ अमान[२], जो मलयाली हैं, उनका गाना पर्याप्त नहीं है... फिर आप लोग गाने के लिए एक पाकिस्तानी लाते हैं और इस देश में नस्लीय ध्रुवीकरण पैदा करते हैं, है ना...?"

"सुन्दरजी, मुझे नहीं लगता कि इस बातचीत से कोई विशेष लाभ होगा। हम अभी भी अशांत नदी के दो अलग-अलग किनारों पर खड़े हैं। मुझे घर वापस भेज दें तो बहुत बड़ी कृपा होगी।"

"यह बिल्कुल वही है, जिसकी मुझे उम्मीद थी। मैं जानता था कि तुम समझौता नहीं करोगे। लेकिन मेरा एक और सवाल बाक़ी है। तुम हमसे इतनी नफ़रत क्यों करते हो?"

क्योंकि तुम नफ़रत के सौदागर हो, वक्त को नहीं भूलते, क्या तुम लगातार हमारी यादों को मिटाने की कोशिश नहीं कर रहे हो? गांधी की हत्या, गुजरात नरसंहार, कई स्थानों पर मुज़फ़्फ़र नगर की पुनरावृत्ति, सिराजजुन्निसा[३] जैसी छोटी लड़कियां...दुर्भाग्य से आप तब तक ऐसा नहीं कर सकते जब तक इस देश में लेखक हैं। हमें आपके हाथों के ख़ून से नफ़रत है। आप उस ख़ून से नफ़रत करते हैं, जो हमारी रगों में बहता है।"

"ठीक है आप वापस जा सकते हैं। लेकिन अगर आप इन विचारों को बदलने के इच्छुक नहीं हैं, तो मैं इसकी गारंटी नहीं दे सकता कि आप कल तक जीवित रहेंगे।

"सुंदरजी, आपके कल के बारे में कोई गारंटी नहीं दे सकता।

सुंदरजी बाहर आए और मुझे कार में बिठाकर विदा किया। तब तक अग्रहारम में सुबह की चहल-पहल शुरू हो चुकी थी। कार उन महिलाओं के बीच से धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी, जो वेंकटेश सुप्रभात सुन रही थीं। जैसे ही हम शहर से बाहर निकले और कन्नाडी नदी के पास पहुंचे, अचानक पीछे की सीट पर बैठा एक आदमी मेरे सामने आ गया। मानो मुझसे कुछ कहना चाह रहा हो। उसके हाथ का चमचमाता चाकू मेरी गर्दन की ओर बढ़ा। ख़ून फूल की कली की तरह चारों ओर बह रहा था। उसने मुझे कसकर पकड़ लिया और मुझे बचने का भी मौक़ा नहीं मिला। उसने मुझसे बहुत धीरे से कहा।

"क्षमा करें, हमारे पास आपको सुधारने के लिए इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है।"

संदर्भ

१-दादरी – दादरी में गोमांस खाने की अफ़वाह पर एक मुसलनमान की पीट –पीटकर मार डाला गया था।
२-उम्मबाई और शाहबाज़ मलयालम के ग़ज़ल गायक हैं।
३-सिराजुन्निसा-अयोध्या आंदोलन के दौरान केरल पुलिस ने गोली से मारे गए थे।
४-अग्रहारम – ब्राह्मणों का इलाक़ा, जहां ज़्यादातर ब्राह्मण समुदाय के घर हैं।
५-वेंकटेश सुप्रभात- भगवान वेंकटेश्वर के प्रातः नमस्कार के समय गाया जाने वाला भजन।